

हिंदी कविता में राष्ट्रीय-चेतना बोध

प्रो. (डॉ.) विजयकुमार रोडे

हिंदी विभाग,

सावित्रीबाई फुले पुणे, विश्वविद्यालय, पुणे

मेल- priyabhaskarannair@gmail.com मो - 8668918426

**देश पर कुरबान होते जाओ तुम, ऐ हिंदियो,
जिंदगी का राज मुजमिर खंजरें-कातिल में है।
साहिले-मक्सद पर ले चल खुदारा, नाखुदा,
आज हिंदुस्तान की कशती बड़ी मुश्किल में है।”¹**

- 'रामप्रसाद 'बिस्मिल'

शोध-सार: हिंदी कविता भारतीय समाज की संवेदनाओं, आकांक्षाओं और संघर्षों की सशक्त अभिव्यक्ति रही है। राष्ट्रीय-चेतना- बोध हिंदी कविता का एक ऐसा केंद्रीय तत्व है जिसने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक ऊर्जा प्रदान की, बल्कि स्वतंत्रता ने उत्तर भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विमर्श को भी दिशा दी। हिंदी कविता न केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में पाठकों के सम्मुख आती है, अपितु भारतीय समाज की सामूहिक चेतना, सांस्कृतिक बोध, सामाजिक उत्थान तथा ऐतिहासिक विकास को प्रतिबिंब के रूप में भी उसने अपनी उपस्थिति दर्ज की है। यह कविता- परंपरा एक ओर जहाँ भावात्मक और कलात्मक सौंदर्य के चरम तक पहुँचती है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक यथार्थ, राजनीतिक दृष्टिकोण और राष्ट्रीय आकांक्षियों का संवाहक भी बनती है। हिंदी काव्य परंपरा के विविध युगों में राष्ट्रीय-चेतना का स्वर विभिन्न रूपों में प्रकट होता रहा है, जिसने जनमानस को उद्बोधित कर स्वतंत्रता, अस्मिता और सांस्कृतिक स्वाभिमान के लिए प्रेरित किया “साहित्यकार की अँजुरी के इस अर्ध में एक गहरी पवित्रता और सघन सत्प्रेरणा थी और राष्ट्र के स्वातंत्र्य में इसी लिए राष्ट्र प्रेम और प्रतिबद्धता में सराबोर सृजन उस पूरे कालखंड में राष्ट्रीय साहित्य का एक ऐसा अमृत-व्यंजन बना रहा, जिसकी स्मृति आज भी हमें एक प्रेरणा और दृष्टि देती है।”² अतः यह स्पष्ट है कि राष्ट्रीय चेतना-बोध आधुनिक हिंदी काव्य में सर्वव्याप्त था।

बीज शब्द: कविता, राष्ट्रीय-चेतना, बोध, संवेदना, सांस्कृतिकता, सामाजिक उत्थान, प्रतिबिंब, प्रतिबद्धता, राष्ट्रवाद, छायावाद, प्रगतिवाद आदि।

प्रस्तावना: साहित्य किसी भी राष्ट्र की आत्मा का प्रतिबिंब होता है और कविता उस आत्मा की सर्वाधिक संवेदनशील एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति। भारतीय संदर्भ में हिंदी कविता ने राष्ट्रीय चेतना के निर्माण, विकास और प्रसार में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। जब राजनीतिक दासता, सामाजिक असमानता और सांस्कृतिक संकट ने भारतीय समाज को जकड़ रखा था, तब कविता जनमानस की आवाज बनकर उभरी। “राष्ट्रीय एकता साम्राज्यवाद से संघर्ष के संदर्भ में एक जरूरी भावना के रूप में देखी गयी है। शांति, विकास और मजबूती के लिए भी यह अपरिहार्य मानी जाती है।”³ इसी कारण हिंदी कवियों ने राष्ट्र-चेतना का आवश्यक औजार कविताओं को मानकर उस दिशा में सृजन कार्य किया

राष्ट्रीय-चेतना बोध का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा नहीं है। बल्कि इसमें सांस्कृतिक गौरव, सामाजिक समानता, भाषाई अस्मिता, मानवीय मूल्य और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना निहित रहती है। हिंदी कविता ने इन सभी पक्षों को अपने काव्यात्मक रूप में समाहित करने का प्रयास किया है। राष्ट्रीय-चेतना बोध एक ऐसी मानसिक और भावनात्मक अवस्था है, जिसमें व्यक्ति स्वयं को राष्ट्र की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक इकाई के रूप में अनुभव

करता है। यह चेतना व्यक्ति को व्यक्तिगत, स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्रहित के लिए सोचने और कार्य करने की प्रेरणा देती है। “हमें जो विचार सूझते हैं वे भी हमारी स्थिति के हालात से प्रेरित होते हैं। ये हमारे चिंतन के तत्व हैं और इनके विभिन्न संयोजनों से अनिवार्यतः हमारी भावनाओं, मतां और इच्छाओं का जन्म होता है।”⁴ राष्ट्रीय-चेतना बोध से प्रेरित होकर समग्र देश में काव्यमय आंदोलन उत्पन्न होने में स्वतंत्रतापूर्व काल की राजनीतिक परिस्थितियाँ भी जिम्मेदार रही हैं।

विषय वस्तु: राष्ट्रीय चेतना किसी राष्ट्र के नागरिकों में अपने देश, उसकी सीमाओं, सांस्कृतिक मूल्यों और ऐतिहासिक विरासत के प्रति गर्व, आत्मीयता एवं उत्तरदायित्व की भावना को जागृत करती है। हिंदी कविता में यह चेतना विभिन्न प्रतीकों, रूपकों और भाव-धाराओं के माध्यम से प्रकट होती रही है- कभी स्वतंत्रता संग्राम की उद्घोषणा के रूप में, तो कभी उपेक्षित वर्गों की पीड़ा के माध्यम से राष्ट्र के पुनर्निर्माण की माँग करते हुए हिंदी कविता, भारतीय साहित्य की एक सशक्त विधा के रूप में, न केवल सौंदर्यबोध का माध्यम रही है अपितु सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय विमर्शों की संवाहक भी सिद्ध हुई है। हिंदी कविता में अभिव्यक्त चेतना-बोध से परिचित होने के लिए पाठक-चिंतक को राष्ट्रवाद की अवधारणा और उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, विचारात्मक होतों को समग्रता में समझना आवश्यक है। क्योंकि राष्ट्र केवल राजनीति सरोकार नहीं, अपितु एक सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक इकाई के रूप में प्रतिष्ठित होता है।

हिंदी कविता में राष्ट्रीय-चेतना की अभिव्यक्ति किसी एक क्षणिक प्रेरणा का परिणाम नहीं अपितु एक दीर्घकालीन वैचारिक एवं काव्यात्मक प्रक्रिया रही है, विभिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संदर्भों में विकसित हुई है। यह प्रक्रिया हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों में विशिष्ट काव्य पप्रवृत्तियों एवं कवियों के माध्यम से अभिव्यक्त होती रही “उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारतीय इतिहास में एक नवीन अध्याय का श्री गणेश हुआ। इस कालखण्ड में नवचेतना के उदय से जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तन हुए। शिक्षित जनता की बदली हुई मनोवृत्तियों ने साहित्यिक गतिविधियों को बहुत दूर तक प्रभावित किया।”⁵ यह काल राजनीतिक पराधीनता के प्रति असंतोष के साथ-साथ सांस्कृतिक पुनरुत्थान न का भी था।

हिंदी कविता में अभिव्यक्त राष्ट्रीय-चेतना बोध का आकलन विभिन्न कालखण्डों पर दृष्टिपात करने पर होगा। हिंदी साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल और रीतिकालीन कविता में भी राष्ट्रीय-चेतना बोध हमें किसी न किसी रूप में प्राप्त होता है। परंतु आधुनिक काल का यह राष्ट्रीय-चेतना बोध कई अर्थों में एक स्पष्टता के साथ उभरकर आता है। जिसे हम भारतेंदु युग, द्विवेदी युग छायावादी युग तथा प्रगतिशील कविता में देख सकते हैं। भारतीय नवजागरण काल के प्रथम चरण में भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिंदी कविता में प्रथम स्वर का उद्घोषक माना जाता है। “कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय चेतना का उ व सबसे पहले भारतेंदु की कविता में हुआ। इसलिए उन्हें राष्ट्रीय काव्यधारा का जनक माना जा सकता है।”⁶ उनकी कविताओं में अतीत की महानता का स्मरण और वर्तमान की दुर्दशा का उल्लेख है।

उन्होंने राष्ट्र की दुर्दशा पर गहन संवेदना व्यक्त करते हुए जनता को जागरूक करने हेतु कविता को एक सामाजिक और राजनीतिक उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया। द्विवेदी युगीन कविता में राष्ट्रीय- चेतना बोध को अधिक संगठित एवं वैचारिक दिशा प्राप्त होती है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादनकाल में 'सरस्वती' पत्रिका राष्ट्रीय चेतना के संवाहन का प्रमुख माध्यम बनी। इस युग की कविताओं में नैतिक पुनर्जागरण, ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ, देशप्रेम आदि भावों की प्रधानता रही है। मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती' इस युग की प्रतिनिधि काव्यकृति मानी जाती है, जिसमें भारत के अतीत गौरव, वर्तमान की दीनता एवं भविष्य के नवनिर्माण का चित्र अंकित है। इसके अतिरिक्त माखनलाल चतुर्वेदी तथा बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जैसे कवियों की रचनाओं में स्वतंत्रता संग्राम की स्पष्ट गूँज सुनाई देती है।

छायावाद को सामान्यतः आत्मचेतना का युग कहा जाता है, किंतु गहन विश्लेषण से ज्ञात होता है कि इस युग की आत्मचेतना राष्ट्रचेतना में विलीन हो जाती है। इस युग के कवियों ने राष्ट्र को एक आध्यात्मिक, मातृस्वरूप, एवं संवेदनात्मक इकाई के रूप में चित्रित किया है। "स्वातंत्र्य संघर्ष का स्वर छायावादी काव्य में कई प्रकार से व्यक्त हुआ है। एकरूप है भारतमाता की वंदना इन कवियों ने महासरस्वती, महालक्ष्मी और महादुर्गा को 'माँ' भारतीया के रूप में प्रस्तुत किया है।"⁷ प्रगतिशील कविता आंदोलन सीधा जनता से जुड़ते हुए राष्ट्र को जनजीवन की यथार्थवादी अभिव्यक्ति में रूपांतरित कर दिया। इस युग में राष्ट्रभक्ति सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता, पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतिरोध आदि के रूपों में अभिव्यक्त होती पायी जाती है। इन सभी तत्वों को इस युग के कवियों ने राष्ट्रबोध के साथ जोड़ने का प्रयास किया। स्वतंत्रता के उपरांत राष्ट्रबोध का स्वरूप पुनर्परिभाषित हुआ। राष्ट्र अब केवल एक प्रतिष्ठान नहीं रहा, बल्कि उसके भीतर मौजूद अंतर्विरोध, बहिष्कृत समूहों की पीड़ा समाप्त कर नए राष्ट्र के निर्माण का दायित्व कवियों पर आ पड़ा। क्योंकि स्वतंत्रता के पश्चात देश में राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियाँ स्थिर नहीं थीं। सरदार वल्लभ भाई पटेल को कहना पड़ा- "एकता के लिए हमें जाति और धर्म के भेद को भूलकर एक बात याद रखनी चाहिए कि हम सभी भारतीय हैं और सभी एक समान हैं। आजाद मुल्क में इनसान-इनसान में भेद नहीं हो सकता है। सभी को समान अवसर समान अधिकार और समान दायित्व मिलने चाहिए।"⁸ अर्थात् स्वातंत्र्योत्तर कवियों की रचनाओं में राष्ट्र एक बहुलतावादी संघर्षशील और आलोचनात्मक इकाई के रूप में उभरता है। इस युग की कविता राष्ट्र को एक प्रश्न, एक खोज और एक नैतिक चुनौति के रूप में प्रस्तुत करती है। यह युग कविता के माध्यम से राष्ट्र की स्तर से संवाद करता है, और उसमें निहित जन विरोधी नीतियों, सामाजिक असमानताओं, तथा संवेदनहीनता पर गहरा प्रश्न चिन्ह अंकित करती है। निष्कर्ष: अतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी कविता में राष्ट्रीय-चेतना बोध का विकास कालक्रमिक रूप से न केवल ऐतिहासिक घटनाओं से प्रभावित रहा, बल्कि यह कविता की सौंदर्य दृष्टि, विचारधारा और सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ भी निरंतर रूपांतरित होता रहा। हिंदी कविता में राष्ट्रीय-चेतना को विस्तृत, प्रभावी और धारदार बनाने में मैथिलीशरण गुप्त, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, श्रीधर पाठक, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि कवियों ने अपनी भूमिका निभाई। हिंदी साहित्य के इतिहास में राष्ट्रीय-चेतना बोध के काव्य ने भारतीयों के मन-मस्तिष्क में राष्ट्रवाद की नई परिभाषा गढ़ने में अपनी संकल्पनाएँ तथा प्रतिभा को समर्पित किया।

इस दौर के कवियों ने न केवल राष्ट्रगान या देशभक्ति के उद्घोष तक कविता को सीमित न रखते हुए राष्ट्र के भीतर मौजूद विसंगतियों, असमानताओं और चुनौतियों को भी उजागर करते हैं। इस दृष्टि से

राष्ट्रीय चेतना एक जागरूक और जिम्मेदार वैचारिक प्रक्रिया बन जाती है। जो राष्ट्र के निर्माण और उसके सतत विकास में सक्रिय भूमिका निभाती है।

संदर्भ सूची-

1. सं. कुमकुम शर्मा, (उत्तर प्रदेश जन्तुशुदा साहित्य विशेषांक, जन-अप्रैल, 2023) पृ.93
2. सं. डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, (साहित्य अमृत, अगस्त 2005 अंक), पृ.6
3. सं. शंभुनाथ, हिंदी साहित्य ज्ञान कोश 6, पृ.3180
4. रामविलास शर्मा, भारतीय नवजागरण और यूरोप, पृ.215
5. डॉ. रामसजन पाण्डेय, साहित्यिक निबंध, पृ. 202
6. सं. शंभुनाथ, हिंदी साहित्य कोश 6, पृ.3184
7. सं. डॉ. महीपाल सिंह राठौड़, (साहित्य संवाद, राष्ट्रीय काव्यधारा विशेषांक जन- दिसं, पृ.91
8. सं. इरफान हबीब, भारतीय राष्ट्रवाद: एक अनिवार्य पाठ, पृ.207